

# ऋषि प्रसाद

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

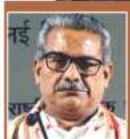
मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी  
प्रकाशन दिनांक : १ जनवरी २०१९  
वर्ष : २८ अंक : ७  
(निरंतर अंक : ३१३)  
पृष्ठ संख्या : ३६  
(आवरण पृष्ठ सहित)

## महिलाओं ने बुलंद की आवाज...

एक बीमार लड़की के कपोलकल्पित, झूठे बयानों के आधार पर हम लाखों महिलाओं के साथ करीब साढ़े पाँच वर्षों से हो रहा है घोर अन्याय... हमें चाहिए न्याय - साजिश करके बोगस केस में फँसाये गये वयोवृद्ध संत श्री आशारामजी बापू को शीघ्र रिहा किया जाय।



देश-विदेशों में बापूजी की रिहाई हेतु महिलाओं द्वारा रैलियाँ व धरने प्रदर्शन



अदालत अपनी सीमा-रेखा का अतिक्रमण न करे - डॉ. कृष्णगोपाल, सह सरकार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ७

इन दिनों बलात्कार या यौन-शोषण के झूठे मुकदमे दर्ज कराने का ट्रेंड बढ़ता जा रहा है, जो चिंताजनक है। इस तरह के चलन को रोकना बेहद जरूरी है।  
- अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश निवेदिता शर्मा, दिल्ली



प्रयागराज का महत्त्व व त्रिवेणी का रहस्य  
प्रयागराज कुम्भ : १४ जनवरी से ४ मार्च

सर्दियों में पुष्टि के  
विशेष प्रयोग





समाज के वर्तमान हालात एवं घटनाक्रम को दृष्टिकोण में रखते हुए देश-विदेश की लाखों महिलाओं द्वारा अपनी माँग बुलंद की गयी है।

उनका कहना है कि अपनी ही संस्कृति एवं देश के हित के लिए तथा समस्त देशवासियों की भलाई के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर देनेवाले संत आशारामजी बापू को प्रताड़ित करने हेतु उनके खिलाफ झूठे आरोप लगवा के षड्यंत्र करके उन्हें जेल भेजा गया तथा इन वयोवृद्ध संत को पिछले करीब साढ़े पाँच वर्षों से जेल में ही रखकर बाहर नहीं आने दिया जा रहा है।

देश के विभिन्न स्थानों में हुई रैलियों एवं धरना-प्रदर्शनों में महिलाओं ने अपनी माँग रखते हुए कहा है कि संतश्री ने बालकों, युवाओं एवं महिलाओं में संयम, सदाचार, आत्मबल आदि सद्गुणों के विकास हेतु बाल संस्कार केन्द्रों, युवा सेवा संघों एवं महिला उत्थान मंडलों का गठन किया, जिनसे जुड़कर लाखों-लाखों बालक-बालिकाएँ, युवक-युवतियाँ तथा महिलाएँ उन्नत हुई हैं। ऐसे में एक लड़की के निराधार, बिना एक भी सबूत के, कपोलकल्पित, झूठे आरोपों को सत्य मान लेना और हम लाखों महिलाओं की आवाज को

अनसुना करना यह नारी-जाति के साथ सरासर अन्याय है। संविधान-प्रदत्त हमारे धार्मिक अधिकारों का हनन किया जा रहा है, उनकी रक्षा की जाय।

जिन बापूजी की पावन प्रेरणा से हजारों नहीं, लाखों-लाखों युवा भाई-बहनें संयम-सदाचार के रास्ते पर दृढ़ता से बढ़ रहे हैं वे संत इस प्रकार का कृत्य कैसे कर सकते हैं? उन्हें शीघ्र रिहा किया जाय।

महिलाओं का कहना है कि संत आशारामजी बापू ने पिछले ५० वर्षों से महिला-सशक्तीकरण व महिला जागृति के साथ समस्त समाज के हित से जुड़े अनेकानेक ज्वलंत मुद्दे उठाये हैं और उन पर अनेक राष्ट्र एवं विश्व स्तरीय सेवा-प्रकल्प चलाये हैं। जैसे - कन्या भ्रूण हत्या रोको अभियान, गर्भ संस्कार केन्द्र, तेजस्विनी अभियान, घर-घर तुलसी लगाओ व पर्यावरण-सुरक्षा प्रकल्प, दिव्य शिशु संस्कार, युवाधन सुरक्षा अभियान, विद्यालयों में योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रम एवं बाल संस्कार के अन्य प्रकल्प, गुरुकुल-शिक्षा, बेसहारों, अनाथों व गरीबों हेतु 'भजन करो, भोजन करो, पैसा पाओ' योजना आदि आदि।

शेष पृष्ठ ७ पर

## लाखों महिलाओं द्वारा न्याय की माँग





# ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २८ अंक : ७ मूल्य : ₹ ६  
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३१३  
प्रकाशन दिनांक : १ जनवरी २०१९  
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)  
पौष-माघ वि.सं. २०७५

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम  
प्रकाशक : धर्मेज जगराम सिंह चौहान  
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा  
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम,  
मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,  
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)  
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैनुफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों,  
पौटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५  
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी  
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा  
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव  
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व  
न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष,  
मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैनुफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactures) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

## सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम,  
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,  
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)  
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८  
केवल 'ऋषि प्रसाद' पृष्ठछाह हेतु : (०७९) ३९८७७७४२  
Email : ashramindia@ashram.org  
Website : www.ashram.org,  
www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

## विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US \$ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US \$ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US \$ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

## इस अंक में...

- ❖ लाखों महिलाओं द्वारा न्याय की माँग - डॉ. विमला मिश्रा २
- ❖ गुरु संदेश ❖ पूज्य बापूजी के अमृतवचन ४
- ❖ काव्य गुंजन ❖ बापू आपके दरश बिना हम... - वि. जौहरी ५
- ❖ आओ ऐसा पवित्र स्नेह दिवस मनायें ❖ जो है वो भुलाने के.. ९, ११
- ❖ अदालत अपनी सीमा-रेखा का अतिक्रमण न करे ७
- ❖ गीता-अमृत ❖ ...तो कर्मयोग में सफल हो के आत्मसाक्षात्कार ! ८
- ❖ दो घंटे की भूख ने बदला जीवन १०
- ❖ बिरहु बिषादु बरनि नहीं जाई ११
- ❖ पर्व मांगल्य ❖ क्या है प्रयागराज का महत्व और त्रिवेणी का रहस्य ? १२
- ❖ कौन मिलते, कौन रह जाते ? १३
- ❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग
  - ❖ शिवलाल काका के दुर्लभ गुरु-संस्मरण ६
  - ❖ दूरद्रष्टा, करुणासिंधु, ब्रह्मवेत्ता हैं मेरे गुरुदेव ! १४
- ❖ ऋषि ज्ञान प्रसाद ❖ माँ का यह वाक्य मैं कभी नहीं भूला १७
- ❖ योग-वेदांत-सेवा ❖ कर्मयोग की आधारशिला १७
- ❖ विद्यार्थी संस्कार ❖ गुरु की परम प्रसन्नता कौन पाता है ? १८
- ❖ सफलता का द्वार : आत्मोन्नति ❖ ...करें दैवी सदगुणों का विकास
- ❖ तेजस्वी युवा ❖ "इसे समुद्र में फिंकवा दीजिये" २०
- ❖ मनुष्य कितना भी पतित हो, वह महान बन सकता है
- ❖ महिला उत्थान ❖ हे देवियो ! आप कैसी माँ बनना चाहेंगी ? २१
- ❖ तत्त्व दर्शन ❖ ब्रह्मज्ञान के अतिरिक्त साधन २२
- ❖ वैराग्य शतक ❖ ...नाशवान के झोंकों में कर सकते हो सहज योग २४
- ❖ सब कुछ दिया, वह न दिया तो क्या दिया ? २५
- ❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी २६
- ❖ सेवा सुवास ❖ ईश्वरप्राप्ति के अनुभव का सबसे सुलभ साधन २७
- ❖ जीवन जीने की कला ❖ साधन-जगत का मेरुदंड : मंत्रजप २८
- ❖ भक्तों के अनुभव ❖ डॉक्टर भी हुए आश्चर्यचकित ! २९
- ❖ बापूजी साथ हैं तो असम्भव क्या ! - शैलेश जोशी (प्राचार्य)
- ❖ आज्ञापालन एवं एकनिष्ठा का प्रभाव ३०
- ❖ शरीर स्वास्थ्य ❖ तलवों में मालिश के चमत्कारी लाभ ३२
- ❖ कब्ज से राहत देनेवाली अनमोल कुंजियाँ
- ❖ अनमोल कुंजियाँ ❖ घर में शांति आने का अद्भुत चमत्कार होगा ३४
- ❖ कठोर या चंचल स्वभाव बदलने की कुंजी

## विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

			
रोज सुबह ७-०० बजे	रोज रात्रि १०-०० बजे	www.ashram.org/live	रोज सुबह ७ व रात्रि ९ बजे

- ❖ 'साधना प्लस न्यूज' चैनल टाटा स्काई (चैनल नं. ५४०), डिश टीवी (चैनल नं. ६७९), रिलायंस डिजिटल टीवी (चैनल नं. ४३१), बिहार में मौर्या सिटी (चैनल नं. ३११), राँची में जीटीपीएल व डेन केबल पर तथा 'JioTV' एन्ड्रोइड एप पर उपलब्ध है।
- ❖ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। ❖ 'प्रार्थना' चैनल जम्मू में TechOne Cable पर उपलब्ध है।

Download Rishi Prasad Official, Rishi Darshan & Mangalmay Official Apps



## ...तो कर्मयोग में सफल हो के आत्मसाक्षात्कार !

- पूज्य बापूजी

(गतांक का शेष)

### ऐसे कर्म से दिव्यता निखरती है

शरीर से जो भी कर्म करें, उन कर्मों को ईश्वरार्पित करते हुए परहित के लिए करें। कोई भी काम अपने व्यक्तिगत हित के लिए न करें। अगर व्यक्तिगत हित का विचार छोड़कर काम किया जाता है तो वह दिव्य हो जाता है, वही कार्य महान हो जाता है।

‘बापूजी! हम अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए कर्म न करें तो हम जियेंगे कैसे?’

अगर आप व्यक्तिगत लाभ की इच्छा छोड़कर कर्म करते हो तो आपके योगक्षेम की जवाबदारी अनंत की है और जब वह आपका योगक्षेम वहन करेगा तो आपका जीवन दिव्य हो जायेगा।

‘महाराज! जब अपने हित के लिए कर्म नहीं करना है तो कर्म करें ही क्यों?’ कर्म किये बिना कोई रह नहीं सकता है। अपने हित का उद्देश्य होगा तो कर्म बाँधेगा। अपना हित छोड़कर परहित के लिए कर्म करेंगे तो वे कर्म आपके कर्मबंधन काट देंगे।

अपने हित के लिए जो कर्म किये जाते हैं उन कर्मों में फल की आसक्ति होती है। फलासक्ति, भोगासक्ति और कर्मासक्ति - ये जीव को बाँधनेवाली होती हैं। आसक्ति से किये हुए कर्म से कर्ता की योग्यता कुंठित होती है। अनासक्त होकर किये गये कर्म से दिव्यता निखरती है।

### कर्मबंधन बढ़ाओ मत

सेठ करोड़ीमल बड़े लोभी थे। उनकी पत्नी

सत्संगी थी। उसने देखा कि करोड़ों रुपये हो गये हैं फिर भी इनका लोभ छूटा नहीं है। एक बार अपने पति को समझा-बुझाकर कथा में ले गयी। कथाकार पंडित दान की महिमा का बड़े सुंदर ढंग से वर्णन करते थे। करोड़ीमल ने दान की महिमा सुनी और सुनते-सुनते डोलने लगे। पत्नी बड़ी खुश हो गयी कि ‘चलो, अब ये भक्त बन जायेंगे।’ कथा पूरी होने पर दोनों घर पहुँचे। पत्नी ने बातों-बातों में पूछ लिया कि ‘‘दान की

महिमा सुनी?’’

सेठ बोले : ‘‘बहुत बढ़िया कथा थी। अब मैं कल से ही दान लेना शुरू कर दूँगा।’’

पत्नी बेचारी और दुःखी हो गयी कि ‘कथा सुनकर, दान दे के कर्मबंधन काटने की जगह पर सेठ ने तो कर्मबंधन बढ़ाने की बात सोच ली! और अधिक धन कमाने का लोभ बढ़ा लिया...’

### ...फिर देखो जीने का मजा !

किसीको धनवान देखकर अगर उससे प्यार किया तो आपकी आसक्ति बढ़ जायेगी, किसीको सत्तावान देखकर प्यार करोगे तो आपका अंतःकरण भयभीत रहेगा, किसीकी सुंदरता देखकर उससे प्यार करोगे तो कामविकार बढ़ जायेगा और कोई कभी-न-कभी आपके काम आयेगा इसलिए उससे प्यार करोगे तो लोभ, कपट और दीनता बढ़ जायेगी। अतः आप किसीसे कुछ लेने की इच्छा न रखें वरन् ‘मुझसे कोई परहित का कार्य हो जाय तो कितना अच्छा!’ ऐसी





## क्या है प्रयागराज का महत्त्व और त्रिवेणी का रहस्य ? - पूज्य बापूजी

**(प्रयागराज कुम्भ : १४ जनवरी से ४ मार्च)**

सतयुग में नैमिषारण्य क्षेत्र परम पवित्र है, त्रेता में पुष्कर तीर्थ, द्वापर में कुरुक्षेत्र तीर्थ तथा कलियुग में गंगा और उसमें भी विशेष प्रयागराज का महत्त्व मत्स्य पुराण में आता है। भूतल पर ६० करोड़ १० हजार तीर्थ माने गये हैं, सबका सान्निध्य प्रयाग में ही होता है। प्रयाग-माहात्म्य सुनने से पापनाश और पुण्य की वृद्धि होती है।

‘हे अच्युत! हे गोविंद! हे अंतरात्मा! मकर राशि पर सूर्य के रहते हुए माघ मास में त्रिवेणी के जल में किये हुए मेरे स्नान से संतुष्ट हो मेरे अंतरात्मा! और शास्त्रोक्त फल मेरे हृदय में फलित करें प्रभुजी!’ - इस प्रकार प्रार्थना करते हुए मौनपूर्वक स्नान करना चाहिए।

### रोज त्रिवेणी-स्नान कैसे हो ?

त्रिवेणी में नहाने को आ गये। त्रिवेणी तो है नहीं, द्विवेणी है - गंगा और यमुना। बोले, तीसरी सरस्वती है गुप्त। गुप्त माने ब्रह्मज्ञान गुप्त खजाना है। वह संतों के पास सद्भाव, श्रद्धा से मिलता है। कोई-कोई विरले उस गुप्त सरस्वती (ब्रह्मज्ञान) को जानते हैं। उसको समझो तो त्रिवेणी में नहाने का पूर्ण फल होता है। सत्त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण - तीनों गुणों से पार होने के लिए माघ मास में त्रिवेणी में आ गये यह भगवान की कृपा है, वाह वाह! भगवान को धन्यवाद दिया। और किसी प्रकार नहीं आये तो सत्संग की गंगा में स्नान करके भगवान को धन्यवाद दो।

एक तपस्वी ब्राह्मण गंगा के पास रहता था और

जीवनभर गंगा-किनारे नहीं गया। उसके यहाँ से गंगा दो कोस की दूरी पर थी। वह साधु-संतों की सेवा करता था। घूमते-घामते दो युवक साधु आये। ब्राह्मण ने उनको खिलाया-पिलाया, उनकी चरण-चम्पी की। साधुओं ने पूछा : “गंगाजी कितनी दूर हैं?”

बोले : “महाराजजी! ६० साल की उम्र हो गयी, मैं तो एक बार भी गंगा नहाने नहीं गया लेकिन लोग बताते हैं कि दो कोस की दूरी है यहाँ से।”

साधुओं ने डाँटा : “तू कितना पापी है! हम तो सैकड़ों मील दूर से आये गंगा नहाने को और तूने जीवन खो दिया, एक बार भी गंगा नहाने नहीं गया! ऐसे व्यक्ति के यहाँ हम गलती से रात में रुके।”

साधु रूठ के चले गये गंगाजी की ओर। पहुँचे तो गंगाजी दिखें ही नहीं और अंदर से मन मरुभूमि-सा हो गया। भटक-भटक के दुःखी हुए। आखिर गंगा की खूब आराधना की तब अंतर्दामी ने प्रेरणा दी : ‘तुमने सत्संगरूपी गंगा में नहानेवाले भक्त का अपमान किया है। जो सत्संग की गंगा में नहाते हैं ऐसे लोगों से तो गंगा, यमुना आदि तीर्थ पवित्र होते हैं। वह तो सत्संगी था, गुरुभक्त था। जाओ, उससे क्षमा माँगो।’

वे साधु आये : “काका! तुम तो रोज गंगा में नहाते हो, सत्संग करते हो, साधुओं की सेवा करते हो। हमें क्षमा करो।” क्षमा-याचना की।

### त्रिवेणी-स्नान का रहस्य

त्रिवेणी में स्नान करने का रहस्य समझो। शिवजी ने पार्वतीजी को वामदेव गुरु से दीक्षा





## दूरद्रष्टा, करुणासिंधु, ब्रह्मवेत्ता हैं मेरे गुरुदेव !

गुजरात के अरवल्ली जिले के धोलापाणा गाँव के कनुभाई तराल (संचालक, श्री हरि ॐ विद्यालय, मेघरज, जि. अरवल्ली) सन् १९८८ से पूज्य बापूजी का सत्संग-सान्निध्य पाते रहे हैं। प्रस्तुत हैं उनके द्वारा बताये गये पूज्य बापूजी के कुछ विस्मयकारी, रोचक जीवन-प्रसंग :

### मेरी वर्षों की खोज पूरी हुई

मैं मंत्रदीक्षा से पूर्व आध्यात्मिक साहित्य पढ़ता था इसलिए इस बात का ज्ञान तो था कि जीवन में गुरु एक ही होने चाहिए और वे भी समर्थ सद्गुरु हों। सद्गुरु की खोज करते-करते मैंने ३-४ गुरु किये, किसी गुरु से कंटी भी पहनी थी लेकिन बिना सद्गुरु के मन में संतुष्टि नहीं थी, जीवन में कोई आनंद, कोई रस नहीं था।

एक साधक द्वारा मुझे पूज्य बापूजी के बारे में पता चला तो मैं अहमदाबाद आश्रम में हो रहे शिविर में गया। जब मैंने पूज्यश्री के दर्शन किये तो मुझे ऐसी अपूर्व आनंदमय अनुभूति हुई, जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। मेरा रोम-रोम झंकृत हो गया। मेरा भटकता हुआ चित्त ठहर-सा गया और अंदर से आवाज आयी कि 'यही वह मंजिल है, जिसे मैं वर्षों से खोज रहा था। यही मेरा आखिरी ठिकाना है।' मैंने उसी समय निश्चय कर लिया कि 'ये ही मेरे सच्चे सद्गुरु हैं। आज के बाद कोई दूसरे गुरु नहीं करूँगा।' और उसी शिविर में मैंने पूज्य बापूजी से सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा ली।

मैं घर आकर आश्रम के सत्साहित्य व पूज्य



गुरुदेव के सत्संग की कैसेटों आदि का वितरण तथा उनकी महत्ता समझाना आदि सेवा करने लगा। उससे मन में बड़ा आनंद आने लगा। सारस्वत्य मंत्रजप के प्रभाव से पढ़ाई में भी अच्छे मार्क्स आने लगे थे। आगे चल के मैं शिक्षक बना और गुरुकृपा से मेरी उत्तरोत्तर पदोन्नति होती गयी।

### एक दिन ऐसा आयेगा...

सन् १९९२ में मैंने पूज्य बापूजी से गुरुमंत्र की भी दीक्षा ले ली और हर पूनम को पूज्यश्री के दर्शन का व्रत ले लिया। सन् १९९४ की बात है। मुझे पता चला कि बापूजी का पूनम-दर्शन हरिद्वार में है। वहाँ पहुँचा और पूज्य बापूजी के निवास-स्थान पर जाने का विचार किया। किसीने बताया कि बापूजी का निवास ऋषिकेश में है। ऋषिकेश गया तो वहाँ पर पूज्य गुरुदेव के निवास का पता नहीं चल रहा था। उस समय यातायात व मोबाइल आदि की इतनी सुविधा नहीं थी।

गुरु-दर्शन के लिए मैं बहुत छटपटा रहा था, बड़ा तीव्र वैराग्य था। बस, कुछ भी करके बापूजी की एक झलक पाने की लालसा थी। मैंने बापूजी से प्रार्थना की : 'गुरुदेव ! मैंने सब प्रयास कर लिये, अब आप ही मुझे अपने तक पहुँचने का मार्ग दिखाइये।' और संकल्प करके बैठ गया कि 'अगर रात को १२ बजे तक बापूजी के दर्शन नहीं हुए तो शरीर गंगाजी में अर्पण कर दूँगा।' आधे घंटे बाद ही मुझे जोर का पेशाब लगा जबकि मैंने उस दिन पानी तक नहीं पिया था। मैं पेशाबघर में गया तो मेरी नजर दीवाल पर लगे एक पर्चे पर पड़ी। उससे





## विद्यार्थी संस्कार



### गुरु की परम प्रसन्नता कौन पाता है ?

शंकर नामक एक बालक गुरु-आश्रम में रहकर अध्ययन करता था। उसकी कुशाग्र बुद्धि, ओजस्वी प्रतिभा एवं नियम-पालन में निष्ठा से उसके गुरु और अन्य साथी उस पर अत्यंत प्रसन्न थे। आश्रम का नियम था कि एक शिष्य दिन में एक ही घर से भिक्षा प्राप्त करेगा। एक दिन शंकर भिक्षा माँगने निकला। एक घर के सामने जाकर कहा : “**भिक्षां देहि।**” वह किसी निर्धन बुढ़िया का घर था। उसके पास मात्र मुट्ठीभर चावल थे। उसने वे भिक्षा में दे दिये। शंकर को उसकी दरिद्रता ध्यान में आयी। वह पड़ोस में एक सेठ के घर गया। सेठानी विभिन्न व्यंजनों से सज्जित एक बड़ा-सा थाल लायी। शंकर ने कहा : “**मैया ! यह भिक्षा पड़ोस में रहनेवाली गरीब वृद्धा को दे आइये।**”

सेठानी ने वैसा ही किया।

शंकर : “**करुणाशाली माँ ! ईश्वर ने आपको खूब धन-सम्पदा दी है। ईश्वर करे वह चिरकाल तक बनी रहे व सुखदायी भी हो। पुरुषार्थ और पुण्यों की वृद्धि से लक्ष्मी आती है, दान, पुण्य और कौशल से बढ़ती है तथा संयम और सदाचार से स्थिर होती है। मुझे आपसे एक और भिक्षा चाहिए। वे वयोवृद्ध माताजी जब तक जीवित रहें तब तक यथासम्भव आप उनका भरण-पोषण करेंगी तो मैं समझूँगा आपने रोज मुझे भिक्षा दी। क्या आप यह भिक्षा मुझे देंगी ?**”

सेठानी ने सहर्ष स्वीकृति दी। शंकर चावल लेकर आश्रम पहुँचा और अपने गुरु से कहा : “**गुरुदेव ! आज मैंने नियम-भंग किया है। मैं भिक्षा के लिए एक नहीं, दो घरों में गया। मुझसे अपराध हुआ है, कृपया**

**मुझे दंड दें।**”

गुरुदेव बोले : “**शंकर ! मुझे सब ज्ञात हो गया है। उस असहाय वृद्धा को मददरूप बनकर तुमने गलत नहीं बल्कि पुण्यकार्य किया है। वत्स ! इसे नियम-भंग नहीं माना जायेगा। तुमने आश्रम का गौरव ही बढ़ाया है। तुम धन्य हो ! मेरा आशीर्ष है कि तुम ऊँचे-से-ऊँचे पद - आत्मपद को उपलब्ध होकर विश्वव्यापी सुयश प्राप्त करोगे।**”

इसी बालक शंकर ने आगे चलकर अपने गुरुदेव का पूर्ण संतोष पा के आत्मपद की प्राप्ति की एवं श्रीमद् आद्य शंकराचार्यजी के नाम से विश्वविख्यात हुए।

कनिष्ठ शिष्य गुरु की आज्ञाओं का स्थूल अर्थ में पालन करके लाभान्वित होता है। मध्यम शिष्य आज्ञाओं का स्थूल अर्थ में तो पालन करता ही है, साथ ही गुरु के संकेतों को भी समझने के लिए तत्पर रहता है। उत्तम शिष्य आज्ञा-पालन करने व संकेत समझने के साथ अपनी मति को सूक्ष्मतरंग बना के गुरु के सिद्धांत को

आत्मसात् कर उसके अनुरूप सेवा खोज लेता है। सिद्धांत का पालन करते-करते एक ऐसी स्थिति आती है जब वह और सिद्धांत दो नहीं रह जाते, वह साक्षात् सिद्धांतमूर्ति हो जाता है। फिर ऐसे सौभाग्यशाली शिष्य को ‘मैंने सिद्धांत का पालन किया’ - ऐसा भान या अभिमान भी नहीं होता, वह विनम्रता की प्रतिमूर्ति हो जाता है। ऐसा शिष्य गुरु की परम प्रसन्नता प्राप्त कर पूर्ण गुरुकृपा का अधिकारी हो जाता है। धन्य हैं ऐसे सत्शिष्य !





## आज्ञापालन एवं एकनिष्ठा का प्रभाव

ब्रह्मवेत्ता महापुरुष का आज्ञापालन, उनके प्रति एकनिष्ठा महान बना देती है और परम पद की प्राप्ति करा देती है। इस तथ्य का प्रतिपादन करनेवाली एक कथा पद्म पुराण के भूमि खंड में आती है :

द्वारका नगरी में योगवेत्ता, वेदवेत्ता शिवशर्मा ब्राह्मण रहते थे। उनके पाँच शास्त्रज्ञ, गुरुभक्त, पितृभक्त पुत्र थे, जिनकी भक्ति एवं आज्ञापालन की निष्ठा की महात्मा शिवशर्मा ने परीक्षा की। उन्होंने अपने योग-सामर्थ्य से एक लीला रची। पुत्रों ने देखा कि उनकी माता की मृत्यु हो गयी है। तब पिता ने ज्येष्ठ पुत्र यज्ञशर्मा को माता के शरीर के खंड-खंड कर विसर्जित करने को कहा। उसने पिता की आज्ञानुसार ही कार्य किया।

शिवशर्मा ने अपने संकल्प-सामर्थ्य से एक स्त्री को उत्पन्न किया और दूसरे पुत्र वेदशर्मा से कहा : “बेटा! मैं दूसरा विवाह करना चाहता हूँ। इन भद्र नारी से बात करो।”

वेदशर्मा ने उन भद्र नारी के पास पहुँचकर प्रस्ताव रखा। उनकी माँग के अनुसार वेदशर्मा ने अपनी तपस्या के बल से उन्हें इन्द्रसहित सभी देवताओं के दर्शन कराये। तत्पश्चात् उन नारी ने परीक्षा लेते हुए कहा : “यदि अपने पिता के लिए मुझे ले जाना चाहते हो तो अपना सिर काट के मुझे दो।”

वेदशर्मा ने हँसते-हँसते अपना सिर काट दिया। उसे लेकर वे भद्र नारी शिवशर्मा के पास पहुँचीं और कहा : “विप्रवर! आपका पुत्र परीक्षा में उत्तीर्ण हो

गया है। यह आपके पुत्र का सिर है, लीजिये।”

शिवशर्मा ने तृतीय पुत्र धर्मशर्मा को अपने मृत पुत्र को जीवित करने को कहा। धर्मशर्मा ने धर्मराज का आवाहन किया और उनसे कहा : “धर्मराज!

यदि मैंने गुरु की सेवा की हो, यदि मुझमें ब्रह्मवेत्ता पिता के प्रति निष्ठा और अविचल तपस्या हो तो इस सत्य के प्रभाव से मेरे भाई जीवित हो जायें।” वेदशर्मा जीवित हो गया।

पिता ने चौथे पुत्र विष्णुशर्मा की परीक्षा हेतु उसे इन्द्रलोक से अमृत लाने को कहा। इन्द्र ने उसे पथभ्रष्ट करने हेतु मेनका को भेजा तथा कई विघ्न उपस्थित किये पर संयम, तप व गुरुस्वरूप अपने

ब्रह्मनिष्ठ पिता की भक्ति के प्रभाव से विष्णुशर्मा ने इन्द्र के सब प्रयासों को विफल कर दिया। अंततः इन्द्र ने क्षमायाचना की और विष्णुशर्मा को अमृत का घड़ा दिया, जिसे लाकर उसने पिता को अर्पण किया।

शिवशर्मा ने उन पुत्रों की भक्ति से संतुष्ट होकर उन्हें वरदान माँगने को कहा। पुत्रों ने कहा : “सुव्रत! आपकी कृपा से हमारी माता जीवित हो जायें।”

महात्मा शिवशर्मा ने अपना संकल्प-बल हटाया और उन पुत्रों ने अपनी माता को सामने पाया। शिवशर्मा ने और भी कुछ वर माँगने को कहा तो पुत्रों ने भगवान के परम धाम भेजने का वर माँगा। ब्रह्मनिष्ठ पिता के ‘तथास्तु’ कहते ही उनके संकल्प के प्रभाव से भगवान विष्णु प्रकट हुए और चारों





पूज्य बापूजी के जीवन, उपदेश और योगलीलाओं पर आधारित आध्यात्मिक मासिक विडियो मैगजीन

## ऋषि दर्शन

भारत में सदस्यता शुल्क

वार्षिक - ₹ ~~8400~~ 900

पंचवार्षिक - ₹ ~~42000~~ 45000

विदेश में सदस्यता शुल्क

वार्षिक - ~~US \$ 50~~ US \$ 20

पंचवार्षिक - ~~US \$ 200~~ US \$ 80

ऋषि दर्शन की ₹ 8400 की सदस्यता  
अब मात्र ₹ 900 में प्राप्त करें  
अपने मोबाइल फोन पर कैसे?

- Install करें "Rishi Darshan" App से
- Open करें "Rishi Darshan" App
- Click करें "Membership" Option पर
- Click करें "Download (e-RD)" पर व भरें फॉर्म
- सफलतापूर्वक Payment करें ➤ जायें "My Account" Section में
- PLAY करें अथवा डाउनलोड करें।



सम्पर्क : 9898220666, (069) 3987777/77

Email: contact@rishidarshan.org, visit: www.rishidarshan.org

## "Celibacy - Divya Prerna Prakash - Brahmacharya" Android App

जीवन को ओजस्वी-तेजस्वी बनाने व महानता की ओर ले जानेवाली सामग्री पायें अब अपने मोबाइल में !

इस एप में आप पायेंगे : \* संयम, ब्रह्मचर्य पर पूज्य बापूजी के ऑडियो एवं विडियो सत्संग \* जीवन के स्वर्णिम काल युवावस्था को कैसे सँवारे ? \* यौवन को निंदनीय कृत्यों से बचाकर वंदनीय बनानेवाला महापुरुषों का प्रसाद \* प्रेरक कथा-प्रसंग \* महापुरुषों की महानता का रहस्य \* उत्साह, ओज-तेज, बल, बुद्धि व स्मृति का विकास कैसे हो ? \* क्या है आकर्षक व्यक्तित्व का कारण ? \* ओज-रक्षा के महत्वपूर्ण प्रयोग \* ब्रह्मचर्य पर विद्वानों के विचार... तथा और भी बहुत कुछ !

आज ही इस एप को Google Play Store से डाउनलोड करें और पायें विद्यार्थियों, युवाओं, गृहस्थियों - सभीके लिए उपयोगी अनुपम सामग्री !

सम्पर्क : (069) 3987777/40, वॉट्सएप नं. : 9600324666

Email - bskamd@gmail.com, Website - balsanskarkendra.org

## शुद्ध शिलाजीत कैप्सूल (100% शुद्ध)

शुद्ध शिलाजीत शरीर के सभी अंगों को बल व मजबूती प्रदान करती है। यह युवा व वृद्ध - दोनों अवस्थाओं में ऊर्जा देनेवाला तथा शक्ति, बुद्धि व स्मृति वर्धक एवं हड्डियों को मजबूत करनेवाला उत्तम रसायन है। शारीरिक कमजोरी, मूत्र-संबंधी रोग, खून की कमी (anaemia), पथरी, जोड़ों का दर्द एवं हृदय की पीड़ा आदि रोगों में लाभदायी है। बाजारू विज्ञापन देखकर अपनी जेब खाली न करें। यह कैप्सूल शुद्ध, सात्विक, सस्ता व विश्वसनीय है।



## होमियो पॉवर केअर

ये गोलिएँ रोगप्रतिकारक शक्ति व कार्यक्षमता वर्धक हैं। ये शारीरिक विकास एवं कोषों के पुनर्निर्माण में सहायक हैं। गर्भवती एवं प्रसूता महिलाओं के लिए उत्तम स्वास्थ्यकारी टॉनिक का कार्य करती हैं। ये बुद्धिजीवी, शारीरिक काम करनेवाले एवं वृद्ध लोगों के लिए उपयोगी हैं।



उपरोक्त सामग्री आप अपने नजदीकी सत्साहित्य सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं। अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए एवं घर बैठे सामग्री प्राप्त करने हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : [www.ashramestore.com](http://www.ashramestore.com) रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क : (069) 3987777/30, ई-मेल : contact@ashramestore.com



# ऋषि प्रसाद सम्मेलन व अभियान द्वारा सत्संग-अमृत के प्रचार-प्रसार में रत पुण्यात्मा

RNI No. 48873/91  
RNP. No. GAMC 1132/2018-20  
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2020)  
Licence to Post Without Pre-payment.  
WPP No. 08/18-20  
(Issued by CPMG UK, valid upto 31-12-2020)  
Posting at Dehradun G.P.O. between  
1<sup>st</sup> to 17<sup>th</sup> of every month.  
Date of Publication: 1<sup>st</sup> Jan 2019



नासिक



प्रयागराज



जालंधर (पंजाब)



कानपुर



भोपाल



जेऊर, जि. अहमदनगर (महा.)



वैरावल (गुज.)



पुणे

## युवा सेवा संघ द्वारा 'तेजस्वी युवा शिविर' हुए सम्पन्न



चंडीगढ़



मथुरा



अम्बाला



रेवाड़ी (हरि.)

## गाँव-गाँव, शहर-शहर में मनाया जा रहा है 'तुलसी पूजन दिवस'



शारजाह (यू.ए.ई.)



योगकियोग (अरुणाचल प्रदेश)



तम्बाड़ी, जि. वलसाड (गुज.)



करावल नगर-दिल्ली



वापी (गुज.)



क्योड़क, जि. कैथल (हरि.)



अमरावती (महा.)



लम्की, जि. कैलाली (नेपाल)



परतवाड़ा (महा.)



अंडला, जि. अलीगढ़ (उ.प्र.)



सिवान, जि. कैथल



राजकोट



पलवली, जि. फरीदाबाद (हरि.)



कासगंज (उ.प्र.)



बारडोली (गुज.)



हिसार (हरि.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट [www.ashram.org/sewa](http://www.ashram.org/sewa) देखें।  
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें [sewa@ashram.org](mailto:sewa@ashram.org) पर ई-मेल करें।